रात्रिक्लास 1.4.68 ओमशान्ति ''शिवबाबा याद है?

शिवबाबा याद है? शिवबाबा याद है तो सम्बन्ध है, याद न है तो बन्धन है। जो इस सम्बन्ध को समझ गये वह तो कहते हैं बाबा बन्धन से छुड़ाओ। एक सम्बन्ध, दूसरा है बन्धन। सम्बन्ध है सतयुग का। बन्धन है कलियुग का। अभी सम्बन्ध है, तो पूरा सम्बन्ध है शिवबाबा से। सम्बन्ध में फिर आधा कल्प रहेंगे। बन्धन खलास। बन्धन और सम्बन्ध का खेल। बाप बच्चे कह बात करते हैं। यह प्रवृत्तिमार्ग का ज्ञान है। सन्यासियों का प्रवृत्तिमार्ग है नहीं। प्यार है ही प्रवृत्तिमार्ग वालों में। निवृत्तिमार्ग में प्यार नहीं। वह घृणा करते हैं। सम्बन्ध में खुशी होती है। सन्यासियों को बन्धन लगता है। यह तो सम्बन्ध है। खुशी होती हैं। और जो भी सम्बन्ध में आते हैं उनको खुशी का पारा चढ़ता है। जो पक्के निश्चय बुद्धि हैं। यहां जो आते हैं मैं एक–2 से पूछ सकता हूं सच्चा सम्बंध है या बन्धन है? यह सम्बन्ध तो आधा कल्प चलता है। बन्धन में दुःख है। सम्बन्ध में सुख है। नाम ही है बन्धन। यह है सम्बन्ध। कोई तो सम्बन्ध को छोड़ उस बन्धन में चले जाते हैं। उसमें ही अपन को अच्छा समझते हैं। वह लाइफ बहुत पसन्द आती है। इस सम्बन्ध को जैसे जेल समझते हैं। ऐसा पार्ट कोई का बजा नहीं है। इसका तो वण्डरफुल है। यहां भी उनका पार्ट बड़ा अच्छा था। मम्मा–बाबा सब जैसे उनके डायरैक्शन से पार्ट बजाते थे। बाबा भी वण्डरफुल है तो वण्डरफुल बातें ही यहां होती हैं। भक्तिमार्ग में नहीं हो सकती। निश्चय में फिर संशय हो जाता है तो क्या हाल हो जाता है। अभी–2 बहुत निश्चय है ,फिर कोई मज़ा ही नहीं। उतरना और चढ़ना। इसमें बहुत हैं। यह है रूहानी उतरना और चढ़ना। तीर्थों पर भी होते हैं। वह है जिस्मानी। दशाएं फिरती रहती हैं। बृहस्पति की दशा है ईश्वरीय, शनिचर की दशा है नीच। अवस्था ही नीचे–ऊपर हो जाती है। पास्ट, प्रज़ेन्ट, फ्युचर को और कोई जानते नहीं हैं। एक बात सिर्फ बच्चे समझ जायें हद के और बेहद के बाप से वर्सा मिलता है। यह है दुःख की दुनियां। वह है सुख की दुनियां। यह है संगम की दुनियां सबसे सुख की। सतयुग से संगम की लाइफ बहुत अच्छी है। शान्ति से भी यह अच्छी। बेहद के बाप साथ हम रहते हैं। बाप, टीचर, गुरू एक ही है। यह कहां भी लिखा हुआ नहीं है। कृष्ण के इतने बच्चे एडॉप्ट हो न सके। बाप के तो एडॉप्टेड बच्चे हैं ना। तुम बहुत–2 भाग्यशाली हो तब बुद्धि में बैठता है। यह भी जानते हैं सभी अपने–2 समय पर आते हैं। इसमें फ़िकरात कोई नहीं। फ़िक्र से फारग़ सतगुरू के तुम बच्चे हो कोई भी फ़िक्र की बात नहीं। याद में ही विघ्न पड़ती है माया की। बच्चों को बुद्धि में है वापस जाना ही है सभी को। वापस जाने लिए हम पढ़ाई पढ़ते हैं। पढ़ाई की रिज़ल्ट है ही नई दुनियां के लिए; इसलिए वास्तव में रहते, करते, खाते–पीते इन सभी चीज़ों से उपराम होना है। पुरानी दुनियां खतम होनी है; इसलिए कोई भी चीज़ में ममत्व नहीं। पुरानी चीज़ में थोड़े ही ममत्व होता है। एक/दो को तुम बहुत तकदीरवान समझेंगे। पुरुषार्थ कर औरों की भी आप समान तकदीर बनानी है। अच्छा, बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।